an>

Title: Further discussion Regarding Sustainable Development Goals raised by Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank on the 5th August, 2015.

HON. DEPUTY SPEAKER: Now we take up Discussion under Rule 193; Shri Prahlad singh Patel to continue.

श्री प्रहलाद सिंह पटेल (दमोह) : कल जब मैंने चर्चा शुरू की थी तो मैंने बताया था कि पूरी दुनिया में विकास के खिलाफ अगर कोई चीज आती है तो वह जनसंख्या है। जनसंख्या के इतने बड़े घनत्व के बाद हम इस सदन में आवास की बात करते हैं तो वह नाकाफी और बेईमानी होगी। अगर जनसंख्या बढती रही तो हम सभी को आवास नहीं दे पायेंगे। मैं उसके विस्तार में नहीं जाना चाहता हूं।

दूसरा, स्वास्थ्य की सुविधायें जनसंख्या के आधार पर ही तय होंगी कि हम उन्हें पूरा कर पायेंगे या नहीं पूरा कर पायेंगे। मैंने कल तीन बातों का उल्लेख किया था। मैंने कहा था कि हम चीन और अमेरीका जैसे विस्तारवादी और साम्राज्यवादी नीति के लोग नहीं हैं। हमें भारत की सीमा के भीतर ही अपनी जमीन पर अपने लोगों के लिए अनाज उपलब्ध कराने पड़ेंगे। जनसंख्या के कारण शिक्षा में भी जो संकट पैदा हुआ है, वह हम सबके सामने है। जब हम प्रगति की बात करते हैं तो मैं तीन बातों पर अपनी बात को केन्द्रीत करूंगा और सबसे अंत में कहूंगा कि जनसंख्या के कारण सुरक्षा पर भी संकट पैदा हुआ है। मैंने आवास, स्वास्थ्य, सुरक्षा, पेय जल, स्वच्छता, शिक्षा और कृषि भूमि के बारे में कहा है। आज कृषि भूमि घट रही है और जनसंख्या बढ़ रही है। हम सब साम्राज्यवादी नहीं हैं। हम किसी दूसरे पर कब्जा करके अपनी जमीन की बढ़ोतरी नहीं कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में अगर कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति घट रही है तो उसकी उर्वरा शक्ति को बढ़ाने का काम कौन करेगा? क्या रासायनिक खाद का उपयोग उसे बढ़ायेगा? रासायनिक खादों के उपयोग ने देश में होने वाली पहली हरित क्रांति ने जो नुकसान पहुंचाया है, हरियाणा और पंजाब उसका उदाहरण है। हमें नये सिरे से उस पर विचार करना पड़ेगा। हमने दो सौ साल की पहले की चेतावनियों को नजरअंदाज किया। आज भी समय है कि हम समय के पहले जागें और इस बात को पूरी जिम्मेदारी के साथ सदन स्वीकार करे, नीतियां बनाये। मैं दुनिया के दो उदाहरण देना चाहता हूं। जब अंग्रेज आये थे तो उन्होंने पहाड़ों को नष्ट किया। मैंने कल एक आंकड़ा दिया था और मेरे एक सहयोगी ने पूरे पहाड़ी प्रदेशों के पशुधन की जब बात की थी। पहाड़ों में 0.01 प्रतिशत पशुधन बचा है। यह गिरावट अंग्रेजों के समय शुरू हुयी थी और हम यहां तक पहुंच गये हैं। आज पहाड़ धंसने लगे हैं और गंगा में लगातार बाढ़ आ रही है। आज से 60 साल पहले भी यह चेतावनी दी गयी थी कि उसके पीछे वहां पर पशुओं का नहीं रहना है। गाय का एक किलो गोबर 9 लीटर पानी को ऑब्जर्व करता है, वह मिट्टी को कटाव से बचाता है और साथ में उर्वरा शक्ति भी प्रदान करता है, इसके अलावा दुनिया में किसी के पास कोई रास्ता नहीं है। कई बार लोगों को देश की कुछ बातों पर विश्वास नहीं होता है। मैं अफ्रीका का उदाहरण देना चाहता हूं। सभी एलेन शाद्री वैज्ञानिक को जानते हैं। वहां पर 22,000 हाथियों को इसलिए मार दिया गया था कि लोगों ने यह माना कि उनसे अफ्रीका के जंगल खराब हो रहे हैं। इतनी बड़ी संख्या में हाथियों के वध होने के बाद अफ्रीका के जंगल सूख गये। उसी समय एलेन शाद्री का नाम आया। उन्होंने अनुसंधान करने के बाद दुनिया को बताया। यह वर्ष 1950 के आस-पास की बात है। भारत की जो गाय है उन्हें अगर यहां पर स्वतंत्र रूप से भ्रमण करने दिया जाये तो रास्ता निकल सकता है। शायद लोग हमारी बात पर विश्वास न करें लेकिन उस प्रयोग पर लोगों को विश्वास करना पड़ेगा। सात वर्षों के बाद जंगल हरे हो गये, मिट्टी की कटाव में कमी आ गयी। मुझे लगता है कि इसे स्वीकार करना पड़ेगा। मैं दूसरा उदाहरण देना चाहता हूं।

मैं दूसरा उदाहरण देना चाहता हूं कि कहीं न कहीं अगर हम इन बातों को मानते हैं कि उर्वरा शक्ति के कोई दूसरे रास्ते हैं कि जमीन की उर्वरा शक्ति को रोका जा सकता है, उसकी गिरावट को बचाया या बढ़ाया जा सकता है। अगर कोई बंजर भूमि है, उसे भी ठीक करने का कोई रास्ता दुनिया के पास आज भी है तो वह सिर्फ और सिर्फ गाय के गोबर का है। लेकिन जब हम इसकी चर्चा करते हैं तो हमेशा चर्चा को गलत दिशा दे दी जाती है। इसलिए मैं बड़ी विनम्रता के साथ इस सदन में कहूंगा कि यदि आप मानते हैं कि हमें विकास के कुछ पैमाने तय करने हैं तो पहले हमें अपनी गलतियों को सुधारना होगा। हमारे पूर्वजों ने जो चेतावनी दी थी, मैंने अपनी चर्चा प्रारंभ करते समय कहा था कि दुनिया में वह संस्कृति कौन सी है जो हजारों साल से जिन्दा रहकर अपने अस्तित्व को बनाए रखे हुए है। वे देश कौन से हैं जिन्होंने उतनी ही सीमाओं के भीतर रहकर अपनी जनता को सुखी और सम्पन्न रखा। हमने कभी शायद इस पर विचार किया होता तो मैं मानता हूं कि हम कभी गलत दिशा में नहीं जाते।

मैं दूसरा उदाहरण नोबल विजेता डा. जोहना वुडविक का देना चाहता हूं। उन्होंने 1931 में काम शुरू किया। वे इस बात के लिए छः बार नामित हुईं। वे जर्मनी की थीं। ...(व्यवधान)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Mr. Prahlad Singh Patel, you may continue next time.

15.31 hrs

PRIVATE MEMBERS' BILLS - Introduced

HON. DEPUTY-SPEAKER: Now the House will take up Private Members' Business – Introduction of Bills.

Item No. 15, Shri Kalikesh N. Singh Deo – not present;

Item No. 16, Shri Kalikesh N. Singh Deo – not present;

Item No. 17, Shri Kalikesh N. Singh Deo – not present

Item No. 18, Shri Pankaj Chaudhary